E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संत रैदास की सामाजिक समरसता, समता एवं सर्वकल्याण विचारधारा की उपादेयता

डॉ. अनुभा पाण्डेय
प्रध्यापक हिन्दी विभाग
श्यामलाल पाण्डवीय शा.स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

अनुष्का
विषयः हिन्दी
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date
05/03/2026
Paper date
Publishing Date
10/03/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.19482294

IMPACT FACTOR
5.924

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल का आन्दोलन जो समता, समानता, विश्वबन्धुत्व, सर्वजन हिताय, सर्वकल्याणक, प्राणी मात्र का कल्याण, मानवता आदि के उर्वरकों से निसृत था, भक्तिकाल हिन्दी में 'स्वर्णकाल' के नाम से जाना जाता है। इस काल के साहित्य में मानव को केन्द्र में रखकर उसके कल्याण के लिए साहित्य लिखा गया। भक्तिकाल के साहित्य ने मानव में छुपी हुई बुराईयों को निकालकर उसका परिमार्जन करने का कार्य किया है और इस कार्य में भक्तिकाल के सन्तों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है क्योंकि उन्होंने जनता के सामने अपने स्वयं की पवित्रता, सादा जीवन, आचरण की शुद्धता का आदर्श जनता के सम्मुख प्रकट किया है।

मुख्यबिन्दु : भक्तिकाल, समानता, मानवता, सर्वकल्याणक, पवित्रता, आदर्श

सन्त रैदास का जन्म काशी के निकट माडुरग्राम में माघ पूर्णिमा विक्रमी संवत 1433 को पिता रघु तथा माता कर्मा की कोख से हुआ। सन्त रैदास की जीवनी के संबंध में ऐतिहासिक कही जाने वाली सामग्री बहुत कम और शायद नगण्य है। जन्म मृत्यु की तिथियों व स्थानों के बारे तो मतभेद है ही साथ ही मां–बाप के नामों के बारे में भी मतभेद है, रैदास रामायण के रचयिता राजा राम मिश्र तथा श्री चन्द्रिका प्रसाद 'जिज्ञासु' ने अपनी रचना 'संत प्रवर रैदास साहब रामायण'

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

में संत रैदास के पिता का नाम 'राहू' तथा माता का नाम 'करमा' माना है। ''जाति–पांति पूंछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई'' नामक आन्दोलन चलाने वाले स्वामी रामानंद के प्रमुख बारह शिष्यों में से प्रिय शिष्य थे सन्त गुरु रैदास। जाति–पाति, छूआ छूत, ऊंच–नीच, खान–पान, स्त्री–पुरुष के भेदभाव से परे मानव को मानव रूप में सम्मान और स्थान देने का नाम ही सन्त परम्परा है। संत तो सबके होते है क्या अपना क्या पराया। नाम का सुमिरन ही उनका ज्ञान है, वही भक्ति है वही कर्म है। संत कुलभूषण कवि रैदास उन महान् सन्तों में अग्रणी थे।

सन्त गुरु रैदास जाति–पाति, छूआ छूत, ऊंच–नीच, खान–पान, स्त्री–पुरुष के भेदभाव से परे मानव को मानव रूप में सम्मान और स्थान देने का नाम ही सन्त परम्परा है।

''जाति–पांति पूंछे नहिं कोई,

हरि को भजै सो हरि का होई''

नामक आन्दोलन चलाने वाले स्वामी रामानंद के प्रमुख बारह शिष्यों में से प्रिय शिष्य थे संत तो सबके होते है क्या अपना क्या पराया। नाम का सुमिरन ही उनका ज्ञान है, वही भक्ति है वही कर्म है। सन्त रैदास सामाजिक समता, समरसता के सबसे बड़े पक्षधर रहे है। उन्होंने अपनी वाणी में मानव एक है। वह उसी परमतत्व ईश्वर की उपज है, का संदेश दिया है। वे हिन्दू और मुसलमानों से प्रेम की भावना से देखते है। वे कहते है कि मुसलमान से हमें दोस्ती करनी चाहिए तथा हिन्दुओं से प्रेम अर्थात् दोस्ती रखनी चाहिए। वे मानते है कि हिन्दू और मुसलमान सभी एक ही ज्योति की उपज है। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही परमपिता परमेंश्वर की संताने है। इसलिए दोनों से ही प्रेम करना चाहिए।

अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। इनकी रचनाओं की विशेषता लोक–वाणी का अद्भुत प्रयोग रही है। जिससे जनमानस पर इनका अमिट प्रभाव पड़ता है। मधुर एवं सहज संत रैदास की वाणी ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतु की तरह है। प्राचीनकाल से ही भारत में विभिन्न धर्मों तथा मतों के अनुयायी निवास करते रहे हैं। इन सबमें मेल–जोल और भाईचारा बढ़ाने के लिए सन्तों ने समय–समय पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे सन्तों में रैदास का नाम अग्रगण्य है। वे सन्त कबीर के गुरुभाई थे, क्योंकि उनके भी गुरु स्वामी रामानन्द थे।

- **रैदास की साहित्यिक साधना**

सन्त रैदास मध्ययुगीन इतिहास के संक्रमण काल में हुए थे। ब्राह्मणों की पैशाविक मनोवृत्ति से दलित और उपेक्षित पशुवत जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य थे। यह सब उनकी मानसिकता को उद्वेलित करता था। सन्त रैदास की समन्वयवादी चेतना इसी का परिणाम है। उनकी स्वानुभूतिमयी चेतना ने भारतीय समाज में जागृति का संचार किया और उनके मौलिक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

चिन्तन ने शोषित और उपेक्षित शूद्रों में आत्मविश्वास का संचार किया। परिणामतरू वह ब्राह्मणवाद की प्रभुता के सामने साहसपूर्वक अपने अस्तित्व की घोषणा करने में सक्षम हो गये। सन्त रैदास ने मानवता की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। सन्त रैदास के मन में इस्लाम के लिए भी आस्था का समान भाव था। कबीर की वाणी में जहाँ आक्रोश की अभिव्यक्ति है, वहीं दूसरी ओर सन्त रैदास की रचनात्मक दृष्टि दोनों धर्मों को समान भाव से मानवता के मंच पर लाती है। सन्त रैदास वस्तुतरू मानव धर्म के संस्थापक थे।

- **रैदास की वाणी का सामाजिक प्रभाव**

रैदास की वाणी, भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत होती थी। इसलिए उनकी शिक्षाओं का श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती थी। जिससे उनकी शंकाओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और लोग स्वतरू उनके अनुयायी बन जाते थे। उनकी वाणी का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि समाज के सभी वर्गों के लोग उनके प्रति श्रद्धालु बन गये। कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति-भावना से बहुत प्रभावित हुई और उनकी शिष्या बन गयी थीं।

"वर्णाश्र अभिमान तजि, पद रज बंदहिजासु की।

सब्देह-ग्रन्थि खण्डन-निपन, बानि विमुल रैदास की।।"

सन्त रैदास सामाजिक समता, समरसता के सबसे बड़े पक्षधर रहे है। उन्होंने अपनी वाणी में मानव एक है। वह उसी परमतत्व ईश्वर की उपज है, का संदेश दिया है। वे हिन्दू और मुसलमानों से प्रेम की भावना से देखते है। वे कहते है कि मुसलमान से हमें दोस्ती करनी चाहिए तथा हिन्दुओं से प्रेम अर्थात् दोस्ती रखनी चाहिए। वे मानते है कि हिन्दू और मुसलमान सभी एक ही ज्योति की उपज है। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही परमपिता परमेंश्वर की संताने है। इसलिए दोनों से ही प्रेम करना चाहिए।

मुसलान सों दोसती, हिन्दुअन सो कर प्रीत।

रैदास जोति सम राम की, नभ है अपने मीत।।

जब लोगों ने गुरूजी के साथ तर्क देते हुए हिन्दु, मुसलमान में भेदभाव दर्शाया तब उन्हें तीखा उत्तर देते हुए महाराज जी ने कहा, शरीर का सब कुछएक जैसे है फिर हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग कैसे हुए इसलिए हिन्दू मुसलमान सभी एक ही हुए।

जब सभ करि हाथ पत्र, दोउ नैन दोउ कान।

रैदास प्रथम कैसे भये, हिन्दु मुसलान।।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संत दादू ने भी मनुष्य निर्माण के लिए दादूवाणी में लिखा है कि–

अल्लह राम छूटा भ्रम मोरा

हिन्दु मुस्लिम भेद कुछ नाही

देखू दर्शन तोरा

सोह प्राण पिण्ड पुनि सोई

सोह लोही मा सा

सोह नैन–नासिका सोई

सहजै कीन्ह तमासा..... दादू वाणी

संतरैदास एवं सामाजिक समरसता संत कवि रैदास जो काफी विचार करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि मनुष्य जाति में सभी एक समान है। मनुष्य जाति में कोई भेदभाव या अंतर नहीं होता। मानव के बीच सामाजिकता की भावना लाने के लिए सभी को एक समान समझाना चाहिए। वे कहते है कि हिन्दू और मुसलमानों का सृष्टिकर्ता एक ही है, फिर इनमें अंतर करना सामाजिक विद्वेष को बढ़ाना होगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सभी दृष्टि का और सभी सृष्टिकर्ता एक ही भगवान है

रैदास पेखिया सोध करि, आदम सभी समान।

हिन्दु मुसलमान कउ, स्रिष्य इक ही भगवान।

संत कवि रैदास ने समस्त प्राणियों को एक ही परमपिता परमेश्वर की देन बताते हुए कहा है कि इन समस्त सृष्टि का कर्ता तो एक ही है और सभी के अन्तर मन में भी उसी का वास है फिर ये भेदभाव क्यो? इससे स्पष्ट होता है कि संत कवि रैदास जी सब प्राणियों को एक बताते हुए एकता की भावना रखते है और समाज में एकता लाना चाहते है। इस प्रकार उनका कदम सामाजिक एकता की भावना जगाता है

रैदास जो करता सिरिस्टि का, वह तो करता एक।

सभ महि जोति सरूप इक, काहे कहू अनेक।।

सामाजिक समरसता तो आज भी हमारे समाज में एक पहेली बनी हुई है। 600 वर्ष पूर्व भी तत्कालीन समाज में समरसता के लिए प्रयास चलते रहते थे। सामाजिक समरसता या मानवतावादी दृष्टिकोण स्थापित करने के लिए उन्होंने भक्तिमार्ग का अवलम्बन लिया और उसका चहुंओर प्रचार–प्रसार किया।

भगति न मुंड मुंडाय, भगति न माला दिखाई।

भगति न चरण धोवाए, ऐ सब गुनी जन गाई।।

कहै रैदास हुरी सब त्रास, तब हरि ताही के पास।

आत्मा थिर गई तब, सब ही निधि पाई।।

उन्होंने कण कण में व्याप्त ईश्वर तथा एक ओंकार नाम की महिमा स्थापन हेतु वह कहते है–

कहै रैदास समे तब, समे जुगू लूटिया।

हम तऊ एकराम कहि छुटिया।

विक्रम संवत 1584 में भारत का यह महान संत एवं कर्मयोगी पंच तत्वों में सदा के लिए विलीन हो गया। भौतिक शरीर भौतिक तत्वों में मिला लेकिन उनकी ज्ञान ज्योति असंख्या मानवों का पथ प्रदर्शन करती है। भारत भूमि में फैली साम्प्रदायिकता, जाति व वर्णव्यवस्था की कुत्सित भावनाएं, वर्ग विरोध, घृणित राजनीति से पावन धरती आज भी प्रदूषित है। आज फिर आवश्यकता है गुरु रैदास महाराज जैसे महान सन्त की, जो मानव एकता, मानव प्रतिष्ठा, सहिष्णुता और मानव को मानव के प्रति सम्मान करना सिखाये, जो राष्ट्रीय एकता के गीत गाये, भाई चारा बढ़ाये, ज्ञान ज्योति जलाये। वस्तुतः सन्त न किसी एक धर्म के होते है न किसी एक वर्ण या जाति के, वे तो सम्पूर्ण मानवता के उद्धारक होते है। अंत में संत रैदास ने फिर अपनी पवित्र वाणी के माध्यम से बताया है कि

जाति के बंधन काट के, दिया ज्ञान प्रकाश।

सभी भक्त सुमरन करै, जय जय संत रैदास।।

रैदास के विचारों का सामाजिक महत्व

आज भी सन्त रैदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर महान् नहीं होता है। विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान् बनाने में सहायक होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण सन्त रैदास को अपने समय के समाज में अत्याधिक सम्मान मिला और इसी कारण आज भी लोग इन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। संत कवि रैदास उन महान् सन्तों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। इनकी रचनाओं की विशेषता लोक–वाणी का अद्भुत प्रयोग रही हैं। जिससे जनमानस पर इनका अमिट प्रभाव पड़ता है।

मधुर एवं सहज संत रैदास की वाणी ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतु की तरह है। गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी रैदास उच्च–कोटि के विरक्त संत थे। उन्होंने ज्ञान–भक्ति का ऊँचा पद प्राप्त किया था। उन्होंने

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

समता और सदाचार पर बहुत बल दिया। वे खंडन–मंडन में विश्वास नहीं करते थे। सत्य को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करना ही उनका ध्येय था। रैदास का प्रभाव आज भी भारत में दूर–दूर तक फैला हुआ है। इस मत के अनुयायी रैदासी या रविदासी कहलाते हैं।

रैदास की विचारधारा और सिद्धांतों को संत–मत की परम्परा के अनुरूप ही पाते हैं। उनका सत्यपूर्ण ज्ञान में विश्वास था। उन्होंने भक्ति के लिए परम वैराग्य अनिवार्य माना जाता है। परम तत्त्व सत्य है, जो अनिवर्चनीय है –'यह परमतत्त्व एकरस है तथा जड़ और चेतन में समान रूप से अनुस्यूत है। वह अक्षर और अविनश्वर है और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में अवस्थित है। संत रैदास की साधनापद्धति का क्रमिक विवेचन नहीं मिलता है। जहाँ–तहाँ प्रसंगवश संकेतों के रूप में वह प्राप्त होती है।' विवेचकों ने रैदास की साधना में 'अष्टांग' योग आदि को खोज निकाला है। संत रैदास अपने समय के प्रसिद्ध महात्मा थे। कबीर ने संतनि में रविदास संतश कहकर उनका महत्त्व स्वीकार किया इसके अतिरिक्त नाभादास, प्रियादास, मीराबाई आदि ने रैदास का ससम्मान स्मरण किया है। संत रैदास ने एक पंथ भी चलाया, जो रैदासी पंथ के नाम से प्रसिद्ध है। इस मत के अनुयायी पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि में पाये जाते हैं।

निष्कर्ष

संत रविदास एक साहित्यिक साधक, विचारक, चिंतक एवं समाजसुधारक थे। उनके विचार पूरी मानव जाति के लिये कल्याणकारी थे। उन्होंने हमेशा मानवता एवं प्रकृति से प्रेम किया। पाखण्ड एवं आडम्बर का विरोध किया। संत रविदास के दर्शन में स्पष्टवादिता, न्यायप्रियता एवं कर्तव्य बोध था। संत रविदास उच्चकोटि के समाजसेवी थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सांभरलोक, जयपुर, राजस्थान।
2. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास – मयूर पेपर बेक्स, नोयडा, दिल्ली
3. गणपति चन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. योगेन्द्र सिंह, संत रैदास –लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. सूर्यनारायण राव, सामाजिक समरसता – के ज्ञान गंगा प्रकाशन, जयपुर
6. विवेक मोहन सन्त रैदास–, राजा पाकेट बुक्स, बुराड़ी दिल्ली
7. श्री दादूवाणी, दयाल महासभा, जयपुर हिन्दी नागरिक प्रचारिणी सभा, वाराणसी